1. भाषा, लिपि तथा व्याकरण

'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है बोलना।

हम बोलकर अपने विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं, तथा सुनकर दूसरों की बात को समझते भी हैं, ऐसे ही दूसरे भी हमारी बात को सुनकर समझते हैं, तथा बोलकर उत्तर देते हैं। इसी प्रकार हम लिखकर अथवा पढ़कर भी अपने विचार प्रकट करते हैं। कहने का अर्थ यह है कि अपने भावों का आदान-प्रदान करने में हम किसी न किसी भाषा का प्रयोग करते हैं। अत:-

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने मन के भाव तथा विचारों को बोलकर अथवा लिखकर व्यक्त करते हैं तथा दूसरों के भाव तथा विचारों को सुनकर या पढ़कर ग्रहण करते हैं।

भाषा के रूप-

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा

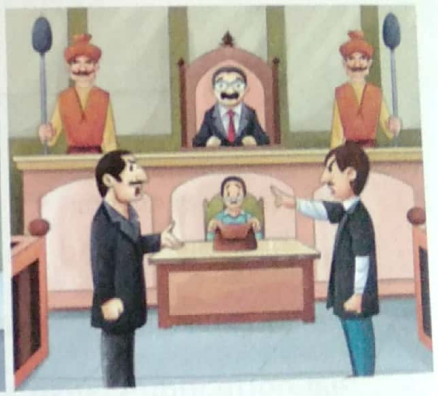

1. **मौखिक भाषा** - बोलकर अपने विचार प्रकट करना तथा सुनकर दूसरों की बात समझना, भाषा का मौखिक रूप कहलाता है। आपसी बातचीत, गीत गाना, वाद-विवाद, तथा भाषण आदि में भाषा के मौखिक रूप का प्रयोग किया जाता है।

2. **लिखित भाषा** - अपने विचारों को लिखकर प्रकट करना अथवा लिखे हुए विचारों को पढ़कर समझना, भाषा का लिखित रूप कहलाता है।

यह भी जानिए

कभी-कभी संकेतों द्वारा भी विचार प्रकट किए जाते हैं, परंतु संकेतों को भाषा नहीं माना जाता है। इसी प्रकार, पशु-पक्षियों की बोली को भी भाषा नहीं माना जाता है।

Scanned with CamScanner

संसार मे बोली जाने वाली सभी भाषाओं में हिंदी का तीसरा स्थान है। हमारे भारतीय संविधान द्वारा निम्नलिखित बाईस भारतीय भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।

हिन्दी, उर्दू, मलयालम, सिंधी, बांग्ला, कोंकड़ी, पंजाबी, उड़िया, डोंगरी, गुजराती, बोडो, असमिया, कश्मीरी, संथाली, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मराठी, मणिपुरी, संस्कृत, नेपाली तथा मैथिली।

क्या आप जानते हैं?

- भारत के संविधान में 22 भारतीय भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है।
- बच्चा अपने माता-पिता से जो भाषा सीखता है, वह उसकी मातृभाषा कहलाती है।
- जो भाषा पूरे राष्ट्र में सबसे अधिक लोगों द्वारा प्रयोग की जाती है, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं।
- जिस भाषा का प्रयोग सरकारी काम-काज में किया जाता है, उसे राजभाषा कहते हैं।
- प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है।

बोली- भाषा के क्षेत्रीय अर्थात् स्थानीय रूप को बोली कहते हैं। बोली का क्षेत्र बहुत ही सीमित होता है। तथा यह किसी क्षेत्र विशेष में ही बोली जाती है थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बोली का रूप बदल जाता है।

हिन्दी भाषा में अवधी, ब्रज, बुन्देली, कन्नौजी, छत्तीसगढ़ी, मगधी, राजस्थानी, भोजपुरी, हरियाणवी, मैथिली तथा खड़ी बोली आदि कुछ प्रमुख बोलियाँ है।

लिपि- मौखिक भाषा को लिखित रूप में प्रकट करने हेतु कुछ चिह्न निश्चित किए गए हैं। ये सभी चिह्न किसी न किसी ध्वनि को व्यक्त करते हैं, जिन्हें लिपि कहते हैं।

भाषा को लिखने के लिए निर्धारित प्रमुख चिह्नों को लिपि कहते हैं।

प्रत्येक भाषा की अपनी एक निश्चित लिपि होती है। कभी-कभी एक लिपि में भी कई भाषाएँ लिखी जा सकती है। जैसे- हिंदी, संस्कृत, मराठी, कोंकड़ी तथा नेपाली भाषाओं की एक ही लिपि 'देवनागरी' है। कुछ भाषाओं की लिपि निम्नलिखित हैं-

भाषा	लिपि
हिन्दी	देवनागरी
संस्कृत	देवनागरी

भाषा	लिपि
पंजाबी	गुरमुखी
अंग्रेज़ी	रोमन

भाषा	लिपि
फ्रेंच	रोमन
जर्मन	रोमन

भाषा	लिपि
उर्दू	फ़ारसी
बंगाली	बांग्ला

व्याकरण- व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा भाषा के नियमों का ज्ञान प्राप्त होता है। व्याकरण में भाषा को शुद्ध रूप में प्रयोग करने के नियम निर्धारित किए जाते हैं।

Scanned with CamScanner

व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा हमे भाषा को शुद्ध रूप से पढ़ने, लिखने तथा बोलने का ज्ञान होता है।

व्याकरण के अंग-

व्याकरण के तीन अंग होते हैं।

1. वर्ण-विचार - वर्ण विचार के अंतर्गत वर्णों के उच्चारण स्थान, उत्पत्ति तथा वर्गीकरण आदि पर विचार किया जाता है।
2. शब्द-विचार - शब्द विचार के अंतर्गत शब्दों के भेद, उत्पत्ति तथा रचना आदि पर विचार किया जाता है।
3. वाक्य-विचार - वाक्य विचार में वाक्यों की रचना, भेद, उनके संबंध, विश्लेषण तथा विराम-चिह्नों आदि पर विचार किया जाता है।

यह भी जानिए

- प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।
- माता-पिता से सीखी गई भाषा मातृभाषा कहलाती है।
- देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है।

आओ! अभ्यास करें-

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) व्याकरण के ..... अंग होते हैं।

(i) दो ☐ (ii) तीन ☐ (iii) चार ☐

(ख) बोलकर विचार प्रकट करना भाषा का ..... रूप कहलाता है।

(i) लिखित ☐ (ii) मौखिक ☐ (iii) सांकेतिक ☐

(ग) निम्नलिखित में से किस भाषा की लिपि देवनागरी नहीं है?

(i) कोंकड़ी ☐ (ii) पंजाबी ☐ (iii) गुजराती ☐

(घ) देवनागरी लिपि का विकास ..... लिपि से हुआ है।

(i) फ़ारसी ☐ (ii) रोमन ☐ (iii) ब्राह्मी ☐

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

2. भाषाओं को उनकी लिपि से मिलाइए-

भाषा	लिपि
हिन्दी	फ़ारसी
अंग्रेज़ी	गुरुमुखी
पंजाबी	रोमन
उर्दू	देवनागिरी

3. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत के सामने (✗) का निशान लगाइए।

(क) भारतीय संविधान में 23 भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है। ☐

(ख) नेपाली की लिपि देवनागरी है। ☐

(ग) भाषा को लिखने के लिए लिपि आवश्यक है। ☐

(घ) व्याकरण भाषा के नियमों का ज्ञान कराता है। ☐

Scanned with CamScanner

(ङ) हिन्दी दिवस 14 नवंबर को मनाया जाता है।

4. उचित शब्दों द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(क) फ्रेंच भाषा की लिपि ..... है।

(ख) बुन्देली तथा मैथिली ..... हैं।

(ग) जिस भाषा को बालक अपने माता-पिता से सीखता है उसे ..... कहते हैं।

(घ) मराठी तथा गुजराती की लिपि ..... है।

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

5. निम्नलिखित भाषाओं के सामने उनकी लिपि लिखिए।

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
(क) उर्दू	.....	(ख) संस्कृत	.....
(ग) नेपाली	.....	(घ) पंजाबी	.....

5. किन्हीं चार बोलियों के नाम लिखिए।

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

6. भाषा तथा बोली में क्या अंतर है?

7. व्याकरण किसे कहते हैं?

8. मौखिक तथा लिखित भाषा से आप क्या समझते हैं?

9. लिपि से आप क्या समझते हैं?

(रचनात्मक कार्य)

1. चित्र देखकर बताइए कि वह भाषा का कौन-सा रूप है?

.....

.....

.....

2. वर्ग पहेली से भाषाओं तथा लिपियों के नाम छाँटकर लिखिए-

पं	गु	र	मु	खी	दे
रो	जा	ज	उ	द	व
म	ज़	बी	रा	दू	ना
न	ने	अं	फा	ती	ग
क्ष	पा	ग्रे	फ्रें	र	री
ओ	ली	ज़ी	पि	च	सी

भाषा	लिपि
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

Scanned with CamScanner

2. वर्ण-विचार

बच्चो! इस चित्र को ध्यान से देखिए। यहाँ एक आदमी गुब्बारे बेच रहा है। वह कह रहा है- "रंग बिरंगे गुब्बारे ले लो....."

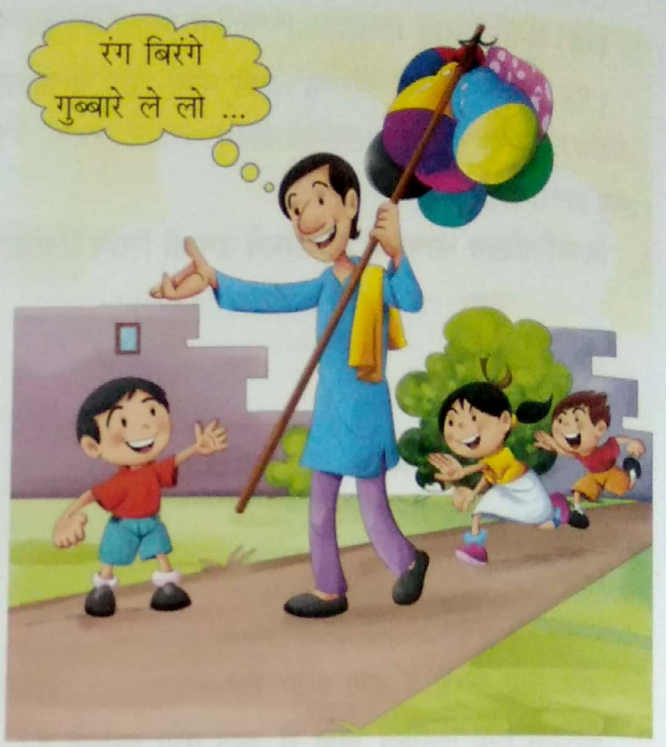

बोलते समय हमारे मुँह से अनेक ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों को ही वर्ण कहते हैं। इन्हीं वर्णों को जोड़कर शब्द बनते हैं। जैसे-

रंग = र् + अ + अं + ग् + अ = 5 ध्वनियाँ

बिरंगे = ब् + इ + र् + अं + ग् + ए = 6 ध्वनियाँ

गुब्बारे = ग् + उ + ब् + ब् + आ + र् + ए = 7 ध्वनियाँ

ले = ल् + ए = 2 ध्वनियाँ

लो = ल् + ओ = 2 ध्वनियाँ

यहाँ 'रंग', 'बिरंगे', 'गुब्बारे', 'ले', तथा 'लो' शब्दों में क्रमशः 'पाँच', 'छह', 'सात', 'दो' तथा 'दो' ध्वनियाँ हैं। ये ध्वनियाँ भाषा की सबसे छोटी इकाई हैं तथा इनके और छोटे टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं। इन ध्वनियों को ही वर्ण कहते हैं।

भाषा की वह सबसे छोटी इकाई जिसके और टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं, वर्ण कहलाती है।

वर्णमाला- प्रत्येक भाषा में वर्णों की संख्या निश्चित होती है। जब इन वर्णों को एक निश्चित तथा व्यवस्थित क्रम में लिखा जाता है, तो उसे वर्णमाला कहते हैं।

वर्णों के निश्चित तथा क्रमबद्ध व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं।

मानक हिन्दी वर्णमाला-

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

अयोगवाह -

अनुस्वार	(ं)	=	अं
अनुनासिक	(ँ)	=	अँ
विसर्ग	(:)	=	अः

व्यंजन -

स्पर्श व्यंजन -	क	ख	ग	घ	ङ्
	च	छ	ज	झ	ञ
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न
	प	फ	ब	भ	म
अंतस्थ व्यंजन -	य	र	ल	व	
ऊष्म व्यंजन -	श	ष	स	ह	

Scanned with CamScanner

विशेष व्यंजन - ड़ ढ़

संयुक्त व्यंजन - क्ष त्र ज्ञ श्र

आगत ध्वनि - ऑ फ़ ज़

वर्णों के भेद- उच्चारण के आधार पर हिन्दी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं-

1. स्वर 2. व्यंजन

1. **स्वर-** जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा बिना रुकावट के मुँह से बाहर आती है, उन्हे स्वर कहते हैं। हिन्दी वर्णमाला में निम्नलिखित 11 स्वर होते हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

स्वर के भेद- स्वर तीन प्रकार के होते हैं-

(क) ह्रस्व स्वर - जिन स्वरों का उच्चारण करने में बहुत कम अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। जैसे- अ, इ, उ, ऋ (इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।)

(ख) दीर्घ स्वर - जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय अर्थात् दो मात्रा का समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

(ग) प्लुत स्वर - जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व स्वरों से तीन गुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। समान्यत: प्लुत स्वरों का प्रयोग हिन्दी भाषा में नहीं किया जाता है। प्लुत स्वर लिखते समय उसके आगे '३' का अंक लिख देते हैं। प्लुत स्वरों का प्रयोग किसी को दूर से पुकारने या देर तक उच्चारण करने में किया जाता है। जैसे- सुनो३३३ तथा ओ३म्।

स्वरों की मात्राएँ-

जब स्वरों को व्यंजन के साथ लगाया जाता है तो उसका स्वरूप बदल जाता है, इस बदले हुए स्वरूप को ही मात्रा कहते हैं। 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती है। प्रत्येक व्यंजन के उच्चारण में 'अ' स्वर की आवश्यकता होती है। किसी व्यंजन के साथ 'अ' को मिलाने पर व्यंजन का हलंत चिन्ह (्) हटा दिया जाता है। जैसे-

क् + अ = क, ख् + अ = ख, ग् + अ = ग घ् + अ = घ

व्यंजन के साथ जुड़े स्वर के चिन्ह को मात्रा कहते हैं।

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अँ	अः
मात्रा	कोई मात्रा नहीं	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ	ं	ँ	ः

याद रहे- 'र' के साथ 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा नीचे न लगाकर 'र' के बीच में लगाई जाती है। जैसे-

र् + उ + रु (रुपया)

र् + ऊ + रू (रूठना)

Scanned with CamScanner

आयोगवाह- हिन्दी वर्णमाला में कुछ अन्य ध्वनियाँ भी होती हैं- **अनुस्वार-** अं (ं), **अनुनासिक-** अँ (ँ), तथा **विसर्ग-** अः (:)। इन्हें न तो स्वर माना जाता है, और न ही व्यंजन, अतः इन्हें अयोगवाह कहते हैं। अन्य स्वरों के समान ही इनकी भी मात्राएँ होती है, अतः इन्हें स्वरों के अंत में गिना जाता है।

अनुस्वार- (ं) - अनुस्वार का उच्चारण करते समय वायु केवल नाक से निकलती है। अनुस्वार को एक बिन्दु के रूप में अक्षर के ऊपर लगाया जाता है। जैसे- हंस। अनुस्वार का प्रयोग वर्णमाला के स्पर्श व्यंजनों के पांचों वर्गों के अंतिम वर्ण के स्थान पर भी होता है। जैसे- गंगा (गङ्गा), कंचन (कञ्चन), ठंडा (ठण्डा), अंधा (अन्धा), चंपा (चम्पा) आदि।

अनुनासिक- (ँ) - जिन वर्णों का उच्चारण करते समय वायु नाक तथा मुँह दोनों से निकलती है, उन्हें अनुनासिक कहते हैं। अनुनासिक को चन्द्रबिन्दु भी कहते हैं। इसे आधे चाँद के ऊपर एक बिन्दु के रूप में शब्द के ऊपर लगाया जाता है जैसे- माँ, चाँद, आँख, पूँछ आदि।

विसर्ग (:) - विसर्ग का प्रयोग संस्कृत शब्दों के साथ किया जाता है। विसर्ग को दो बिंदुओं के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। जैसे- प्रातः, पुनः।

यह भी जानिए

हलंत (्) - हलंत का प्रयोग 'अ' (स्वर) रहित व्यंजन को दिखाने के लिए करते हैं। जब किसी व्यंजन को बिना स्वर के लिखना हो, तो व्यंजन के नीचे एक तिरछी रेखा खींच देते हैं।

जैसे- क् + अ = क, ख् + अ = ख आदि।

अंग्रेज़ी भाषा से आए शब्दों के प्रयोग के कारण 'ऑ' स्वर को गृहीत स्वर के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे डॉक्टर, कॉफी आदि। इसे 'आ' तथा 'ओ' के बीच की ध्वनि से बोला जाता है।

2. व्यंजन- जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजनों के भेद-

व्यंजनों के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं।

(क) स्पर्श व्यंजन (ख) अंतस्थ व्यंजन (ग) ऊष्म व्यंजन

(क) स्पर्श व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुंह से निकलने वाली हवा, मुंह के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करते हुए बाहर निकलती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इन्हें निम्नलिखित पाँच वर्गों में बांटा गया है।

स्पर्श व्यंजन		
क वर्ग	-	क, ख, ग, घ, ङ्
च वर्ग	-	च, छ, ज, झ, ञ्
ट वर्ग	-	ट, ठ, ड, ढ, ण
त वर्ग	-	त, थ, द, ध, न
प वर्ग	-	प, फ, ब, भ, म

(ख) अंतःस्थ व्यंजन - अंतःस्थ अर्थात् बीच में स्थित। जिन वर्णों का उच्चारण स्वर तथा व्यंजन के बीच का-सा होता है, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। इन वर्णों का उच्चारण करते समय जीभ मुँह के किसी भी भाग का पूरी तरह से स्पर्श नहीं करती है। ये संख्या में चार होते हैं। य्, र्, ल्, व्

(ग) ऊष्म व्यंजन - जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा के रगड़ खाने से मुँह की ऊष्मा (गर्मी) उत्पन्न होती है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये भी संख्या में चार होते हैं। श्, ष्, स्, ह्

Scanned with CamScanner

संयुक्त व्यंजन - दो भिन्न व्यंजनों के योग से बने व्यंजन को संयुक्त व्यंजन कहते है। ये निम्नलिखित हैं-

क्ष	=	क्	+	ष
त्र	=	त्	+	र
ज्ञ	=	ज्	+	ञ
श्र	=	श्	+	र

संयुक्त व्यंजन

अतिरिक्त व्यंजन - हिन्दी भाषा में दो अतिरिक्त व्यंजनों 'ड़' तथा 'ढ़' का भी प्रयोग किया जाता है जैसे-

ड़ = सड़क, पेड़

ढ़ = पढ़ना, चढ़ना

आगत ध्वनियाँ - दूसरी भाषाओं से आई हुई ध्वनियों को आगत अथवा विदेशी ध्वनि कहते है। जैसे - ज़ तथा फ़। अरबी तथा फ़ारसी भाषा से आई ध्वनियों ज़ तथा फ़ को आगत ध्वनि तथा 'नुक्ता' कहा जाता है। इसे 'ज' तथा 'फ' के नीचे बिन्दु के रूप में लगाते हैं। जैसे- मेज़, सज़ा, लुत्फ़, माफ़ी आदि।

विवृत (ॅ) - अंग्रेज़ी भाषा से आए शब्दों में विवृत (ॅ) का प्रयोग किया जाता है। जैसे- डॉक्टर, कॉलेज, बॉल, कॉफी आदि।

द्वित्व व्यंजन - जब दो समान व्यंजन ध्वनियों का संयोग होता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। जैसे-

क् + क	=	क्क	=	पक्का, मक्का, छक्का।
च् + च	=	च्च	=	बच्चा, सच्चा, गच्चा।
ट् + ट	=	ट्ट	=	खट्टा, मिट्टी, छुट्टी।
त् + त	=	त्त	=	पत्ता, छत्ता, गत्ता।
ड् + ड	=	ड्ड	=	लड्डू, गुड्डू।

द् + द	=	द्द	=	गद्दा, भद्दा, सद्दी।
न् + न	=	न्न	=	पन्ना, गन्ना, अन्ना।
प् + प	=	प्प	=	चप्पा, पप्पू, चप्पल।
ल् + ल	=	ल्ल	=	बल्ला, दिल्ली, बिल्ली।
म् + म	=	म्म	=	अम्मा, चम्मच, मम्मी।

वर्ण- संयोग - जब दो भिन्न-भिन्न व्यंजनों का संयोग होता है तो इसे वर्ण-संयोग अथवा संयुक्ताक्षर कहते हैं। जैसे-

द् + व	=	द्वार
द् + य	=	विद्या
ह् + न	=	चिन्ह
द् + ध	=	उद्धार

त् + य	=	मृत्यु
ट् + ठ	=	गट्ठर
क् + त	=	भक्त
प् + य	=	प्यास

वर्ण-विच्छेद - किसी शब्द के वर्णों को अलग- अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। इसी प्रकार वर्णों को जोड़कर शब्द बनाना वर्ण-संयोजन कहलाता है।

किसान = क् + इ + स् + आ + न् + अ

विद्यालय = व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अ

Scanned with CamScanner

उच्चारण के आधार व्यंजन के भेद-

उच्चारण के आधार पर व्यंजन के दो भेद होते हैं-

1. अल्पप्राण 2. महाप्राण

1. **अल्पप्राण व्यंजन** - जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुंह से कम (अल्प) मात्रा में हवा बाहर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण तथा य्, र्, ल्, व् अल्पप्राण व्यंजन कहलाते हैं।

2. **महाप्राण व्यंजन** - जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुंह से अधिक मात्रा में हवा बाहर निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा वर्ण तथा श्, ष्, स्, ह् महाप्राण व्यंजन कहलाते हैं।

आओ! अभ्यास करें-

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

1. दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए।

(क) स्वर ..... प्रकार के होते हैं।

(i) दो ☐ (ii) तीन ☐ (iii) चार ☐

(ख) निम्नलिखित में अल्पप्राण व्यंजन है-

(i) क ☐ (ii) ख ☐ (iii) घ ☐

(ग) निम्नलिखित में महाप्राण व्यंजन है-

(i) य ☐ (ii) ह ☐ (iii) व ☐

(घ) महाप्राण का उच्चारण करते समय मुख से ..... वायु निकलती है।

(i) कम ☐ (ii) अधिक ☐ (iii) नहीं ☐

(अतिलघु उत्तरीय प्रश्न)

2. सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगाइए।

(क) प्रत्येक वर्ग के पहले, तीसरे तथा पाँचवे वर्ण को अल्पप्राण कहते हैं। ☐

(ख) फ़ को आगत ध्वनि कहते हैं। ☐

(ग) श से ह तक सभी व्यंजनों को ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ☐

(घ) 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती है। ☐

3. उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए।

(क) दीर्घ स्वर ..... होते हैं।

(ख) मूल स्वरों की संख्या ..... है।

(ग) सुनो३३३ ..... स्वर है।

(घ) हिन्दी में ..... स्पर्श व्यंजन होते हैं।

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

4. नीचे लिखे वर्णों को जोड़कर शब्द बनाइए-

(क) क् + इ + त् + आ + ब् + अ = ...

(ख) म् + ऋ + ग् + अ = ...

(ग) व् + य् + आ + प् + आ + र् + अ = ...

5. नीचे लिखे शब्दों के वर्ण अलग-अलग करके लिखिए।

(क) उज्ज्वल = ...

Scanned with CamScanner

(ख) प्रसाद = ...

(ग) मूर्तिकार = ...

6. ढ़, ड़, ज़ तथा फ़ का प्रयोग करके दो-दो शब्द लिखिए।

(क) ढ़ = ...

(ख) ड़ = ...

(ग) ज़ = ...

(घ) फ़ = ...

7. निम्नलिखित द्वित्व व्यंजनों का प्रयोग करके दो-दो शब्द लिखिए।

(क) ल् + ल = ...

(ख) च् + च् = ...

(ग) त् + तं = ...

(घ) म् + म् = ...

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(क) स्वर के कितने प्रकार हैं?

(ख) व्यंजन किसे कहते हैं?

(ग) अल्पप्राण व्यंजन किसे कहते हैं।

(घ) महाप्राण व्यंजन से आप क्या समझते हैं?

(रचनात्मक कार्य)

1. निम्नलिखित वर्णों से तीन-तीन शब्द बनाइए।

(क) क्ष = ...

(ख) त्र = ...

(ग) ज्ञ = ...

(घ) श्र = ...

2. चित्रों को देखकर, द्वित्व व्यंजन वाले शब्द लिखिए।

.....

.....

.....

.....

3. निम्नलिखित व्यंजनों में से अल्पप्राण तथा महाप्राण व्यंजन छाँटकर लिखिए।

त्	ठ्	द्	न्	
ज्	च्	ट्	स्	
य्	ल्	श्	ह्	
ब्	र्	म्	भ्	
व्	क्	ख्	ग्	

अल्पप्राण

महाप्राण

Scanned with CamScanner